श्री गंगा चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग ।
जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय जननी हरण अघ खानी । आनंद करनि गंग महारानी ॥
जय भागीरथी सुरसरि माता । कलिमल मूल दलिनि विख्याता ॥
जय जय जय हनु सुता अघ हननी । भीषम की माता जग जननी ॥
धवल कमल दल सम तनु साजे । लखिशत शरद चन्द्र छवि लाजे ॥
वाहन मकर विमल शुचि सोहै। अमिय कलश कर लखि मन मोहैं ॥
जड़ित रत्न कंचन आभूषण । हिय मणि हार, हरणितम दूषण ॥
जग पावनि त्रय ताप निसावनी । तरल तरंग तंग मन भावनि ॥
जो गणपति अति पूज्य प्रधाना । तिहुं ते प्रथम गंग अस्नाना ॥
ब्रह्म कमण्डल वासिनी देवी । श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवी ॥
साठि सहस्त्र सगर सुत तार्‌यो । गंगा सागर तीरथ धार्‌यो ॥
अगम तरंग उठ्‌यो मन भावन । लखि तीरथ हरिद्वार सुहावन ॥
तीरथ राज प्रयाग अक्षयवट । धर्‌यो मातु पुनि काशी करवट ॥
धनि धनि सुरसरि स्वर्ग की सीढ़ी । तरणि अमित पितृ पद पीढ़ी ॥
भागीरथ तप कियो अपारा । दियो ब्रह्म तव सुरसरि धारा ॥
जब जग जननी चल्यो हहराई । शम्भु जटा महं रह्यो समाई ॥
वर्ष पर्यंत गंग महारानी । रहीं शम्भु के जटा भुलानी ॥
पुनि भागीरथ शम्भुहिं ध्यायो । तब इक बून्द जटा से पायो ॥
ताते मातु भई त्रय धारा । मृत्यु लोक, नभ, अरु पाताला ॥
गईं पाताल प्रभावति नामा । मन्दाकिनी गइ गगन ललामा ॥
मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनि । कलिमल हरणि अगम जग पावनि ॥
धनि मइया तब महिमा भारी । धर्म धुरी कलि कलुष कुठारी ॥
मातु प्रभावति धनि मंदाकिनी । धनि सुरसरित सकल भयनासिनी ॥
पान करत निर्मल गंगा जल । पावन मन इच्छित अनंत फल ॥
पूरव जन्म पुण्य जब जागत । तबहिं ध्यान गंगा महं लागत ॥
जई पगु सुरसरि हेतु उठावहिं । तई जगि अश्वमेघ फल पावहि ॥
महा पतित जिन काहु न तारे । तिन तारे इक नाम तिहारे ॥
शत योजनहुँ से जो जन ध्यावहिं । निश्चय विष्णु लोक पद पावहिं ॥
नाम भजन अगणित अघ नाशै । विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै ॥
जिमि धन धर्म अरु दाना । धर्म मूल गंगाजल पाना ॥
तव गुण गुणन करत दु:ख भाजत । गृह गृह सम्पति सुमति विराजत ॥

गंगहि नेम सहित नित ध्यावत । दुर्जनहूँ सज्जन पद पावत ।।
बुद्धिहीन विद्या बल पावै । रोगी रोग मुक्त ह्वै जावै ।।
गंगा गंगा जो नर कहहीं । भूखा नंगा कबहूँ न रहहीं ।।
निकसत ही मुख गंगा माई । श्रवण दाबि यम चलहिं पराई ।।
महां अघिन अधमन कहं तारे । भए नर्क के बंद किवारें ।।
जो नर जपे गंगा शत नामा । सकल सिद्धि पूरण ह्वै कामा ।।
सब सुख भोग परम पद पावहिं । आवागमन रहित ह्वै जावहिं ।।
धनि मइया सुरसरि सुखदैनी । धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी ।।
ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा । सुन्दरदास गंग कर दासा ।।
जो यह पढ़े गंग चालीसा । मिलै भक्ति अविरल वागीसा ।।

।। दोहा ।।

नित नव सुख सम्पति लहैं, धरें गंग का ध्यान ।
अंतसमय सुरपुर बसै, सादर बैठि विमान ।।
सम्वत् भुज नभ दिशि।, राम जन्म दिन चैत्र ।
पूरण चालीसा कियो, हरि भक्तन हित नैत्र ।।